PHILOSOPHY

Hons I (Paper-I)

प्रकृति (सांख्य)

Dr. S. K. Singh
Mob - 9451449951

→ भारतीय दर्शन में सांख्य दर्शन एक द्वैतवादी विचारधारा के रूप में प्रतिष्ठित है। यह विश्व के मूल में दो प्रकार के स्वतंत्र तत्वों की सत्ता स्वीकार करता है। इनमें से एक जड़ प्रकृति है और दूसरा चेतन पुरुष है। प्रकृति को संपूर्ण जड़ जगत का ~~कारण स्वीकार~~ मूल कारण माना गया है।

~~→ प्रकृति जड़, सूक्ष्म, क्रियाशील, नित्य व सत्वरजतमोगुण की साम्यावस्था है।~~

→ साम्यावस्था है। यह देश-काल से परे, अचेतन, अत्यन्त, कारणरहित, सदाक्रियाशील, व्यापक, अतीन्द्रिय, शाश्वत और एक-ऐसी प्रकृति में ही सारा संसार बीज रूप से निहित है।

→ प्रकृति जड़, सूक्ष्म, क्रियाशील, नित्य व सत्वरज-तमोगुण की साम्यावस्था है। ये गुण स्वयं (सत्व, रजस एवं तम) स्वयं अत्यल्प हैं। ये प्रकृति के मूल निर्माणक तत्व हैं, संघटक तत्व हैं। ये गुण सूक्ष्म और अतीन्द्रिय हैं इसलिये इनका प्रत्यक्ष नहीं होता। इनके कार्यों से इनका अनुमान किया जाता है। सत्व गुण का कार्य सुख है, रजोगुण का कार्य दुःख है तथा तमोगुण का कार्य मोह है।

(i) सत्वगुण → सत्व गुण शुद्धता का प्रतीक है। यह प्रकाशक और लघु है। सत्व के कारण मन तथा बुद्धि विषयों को ग्रहण करते हैं। सभी प्रकार के सुखात्मक अनुभूति, यथा - हर्ष, उल्लास आदि-इसके कार्य है।

(ii) रजो गुण → रजोगुण क्रिया का प्रवर्तक है। यह स्वयं सक्रिय होता है और दूसरों को भी सक्रिय करता है। इसका स्वभाव उत्तेजक एवं दुःखात्मक होता है। सत्व और तम दोनों रजोगुण की सहायता से ही सक्रिय होते हैं। यह दुःख उत्पन्न करता है।

(iii) तमोगुण → तमोगुण मोह या अज्ञान का प्रतीक है। यह गति और अवरोधक है। यह सत्व तथा रजोगुण की क्रिया का अवरोधक है। इससे जड़ता एवं निष्क्रियता आती है।

→ तीनों गुणों में परस्पर विरोध भी है और सहयोग भी, वे सर्वदा एक साथ एक-दूसरे से अविच्छेद रूप से रहते हैं। तीनों परस्पर विरोधी होते हुये भी परस्पर सहयोग से पुरुष के प्रयोजन की सिद्धि करते हैं।

Scanned with CamScanner

→ तीनों गुण नित्य परिवर्तनशील हैं। परिवर्तन होना इनका स्वभाव है। इस प्रकार नित्य गतिशीलता इस जगत का एक मूलभूत लक्षण है। गुणों में दो प्रकार का परिवर्तन होता है - सरूप परिणाम (सजातीय परिवर्तन) और विरूप परिणाम (विजातीय परिवर्तन)।

(i) ~~सजातीय परिवर्तन~~ → सरूप परिणाम → सरूप परिवर्तन वह है जब एक गुण अपने वर्ग के गुणों में स्वतः परिणत होता है। यह परिवर्तन प्रलयावस्था में होता है। प्रकृति की साम्यावस्था प्रलयावस्था है। इस स्थिति में कोई विकास नहीं होता है।

(ii) विरूप परिणाम → विरूप परिवर्तन वह है जब एक वर्ग के गुण का रूपान्तर दूसरे वर्ग के गुण में होता है। यह प्रकृति की वैषम्यावस्था है। यह विरूप परिवर्तन तभी होता है जब पुरुष (आत्मा) का प्रकृति से सामीप्य होता है। पुरुष के सामीप्य से प्रकृति की साम्यावस्था भंग हो जाती है। गुणों की साम्यावस्था में जो विकार उत्पन्न होता है, उसे 'गुण-क्षोभ' कहते हैं।

→ प्रकृति नित्य परिणामशालिनी है, इसमें निरन्तर परिवर्तन होते रहता है।

→ ईश्वरकृष्ण कृत सांख्यकारिका में प्रकृति की स्वतंत्र सत्ता को सिद्ध करने के लिये निम्न युक्तियों का प्रयोग किया गया है -

"भेदानां परिमाणात् समन्वयात् शक्तितः प्रवृत्तेश्च।
कारणकार्यविभागादविभागाद् वैश्वरूप्यस्य॥"

(i) भेदानां परिमाणात् → ~~अनन्त सांत वस्तुएँ~~ अनन्त सान्त (जिसका अन्त हो) वस्तुएँ ~~अनन्त~~ अनन्त की ओर संकेत करते हैं और वह प्रकृति है।

(ii) समन्वयात् → त्रिगुणात्मक प्रकृति के कारण ही सभी पदार्थों में तीनों गुण समन्वित रहते हैं।

(iii) शक्तितः प्रवृत्तेश्च → मूल कारण प्रकृति ही ~~शक्तिमति है~~ शक्तिमती है जिससे सारा जगत व्यक्त है।

(iv) कारणकार्य विभागात् → व्यक्त कार्य अव्यक्त कारण की ओर संकेत करता है।

(v) अविभागाद् वैश्वरूप्यस्य → विश्व की अविभाजिता भी प्रकृति की ओर संकेत करती है। अव्यक्त अवस्था (प्रलय) में समस्त कार्य बीज रूप से अपने कारण में विलीन हो जाते हैं और कार्य और कारण में अविभाग या अभेद हो जाता है।

Scanned with CamScanner